साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

कविता : आदित्य, आदित्य की ओर

-कुमार अजस्र
हिंदी प्राध्यापक, राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, गुढ़ा नाथावतान, बूंदी (राजस्थान)
https://sahityacinemasetu.com/kavita-aditiya-aditiya-or-chala/

धरती से उड़कर आदित्य,
उस आदित्य ओर चला।
बदल-बदल कर वह कक्षाएँ,
एक बार फिर वो सम्भला।

इसरो की आशाएँ उस पर।
भारत-विश्व स्वाभिमान है।
अजस्र भास्कर देख नजारा,
विस्मय स्वर उससे निकला।

कदम-कदम आगे ही बढ़ता,
'आदित्य', 'आदित्य' का है जो पथिक।
इसरो ने पाथेय दिया जो,
मार्ग कट गया सभी, क्षणिक।

'लक्ष्य सफल हो' भारत-जन,
सब देते हैं उसको आशीष।

भारत-अजस्र अंतरिक्ष प्रसारित,
उस आदित्य की भावी जीत।
टिक-टिक, टिक-टिक घड़ियां गिनते,
एक-एक सब इसरोजन।

कण-कण से क्विंटल कर डाला,
तुम सबको *अजस्र* नमन।
भारत के कोने-कोने से,
आशीष मिले प्रबल, घनघोर।

भारत भावी भविष्य निर्भर,
तुम पर ही,
हे...!
जन गण मन।